पंचम अध्याय

उपसंहार

पाँचवा अध्याय

उपसंहार

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य की प्रगतिशील परम्परा के एक प्रभावी साहित्यिक हैं। आपके इसी प्रगतिशील व्यक्तित्त्व का प्रभाव आपकी रचनाओं पर पड़ा हुआ है। आपकी दृष्टि हमेशा समाज में उपेक्षित वर्ग पर रहीं है। उन्हीं लोगों के जीवन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर आपने साहित्य की निर्मिति की है। भीष्मजी का लेखक के रूप में व्यक्तित्त्व बहु आयामी दिखाई देता है। आपका व्यक्तित्त्व संघर्षशील कलाकार का रहा है और यह अनेक लेखन प्रकारों से उभरकर सामने आता है। भीष्मजी ने उपन्यासकार, कथालेखक, जीवन और अनुवाद लेखक के रूप में सफलता प्राप्त की है, परंतु नाटककार के रूप में भी आपने अधिक ख्याति प्राप्त की है। मैंने आपके 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' इन दो नाट्यकृतियों का यथार्थ और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन किया है।

भीष्मजी का जीवन भी संघर्षमय रहा। आप अपने अंदर की विद्रोही भावना को साहित्य में व्यक्त करते रहे। सामाजिक दायित्व के प्रति संवेदनशील रचनाकार के रूप में आप हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित है। इसी संवेदनशीलता को रचनात्मक ढंग से आपके साहित्य में देखा जाता है। मनुष्य को समाज के ढंग से देखनेवाला आपका स्वभाव आपके साहित्य को चार चाँद लगा देता है। आपके विचार मार्क्सवादी तो है ही लेकिन सुधारवादी भी है। प्रगतिवादी का मूलभूत विचार साम्यवाद का समर्थन तथा पूँजीवादी, भ्रष्ट राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक रूढ़ियों के विरूद्ध क्रांति का स्वर आपके साहित्य में दिखाई देता है।

भीष्मजी के साहित्य में कथा के केंद्र में आधुनिक भारत के नगरों और महानगरों में रहनेवाला निम्नवर्ग, मध्यवर्ग, कारागिर, साम्राज्यवादी वर्ग और सामन्तवर्ग रहा है। मनुष्य के बीच होनेवाले संघर्ष का मूल कारण है - अर्थ। इसी अर्थ पर मनुष्य का सारा जीवन बनता है और बिगड़ता है।

भीष्मजी ने मनुष्य जीवन का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चित्रण अपने नाटक साहित्य में किया है। आपकी कृतियों द्वारा साम्यवाद का समर्थन, पूँजीवाद , राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक रूढियों के विरूद्ध क्रांति, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद ईश्वर और आत्मा की सत्ता की अस्वीकृती, राष्ट्रीय भावना आदि बातें उभरकर पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करती है। भीष्मजी अपने नाटक द्वारा यह स्पष्ट करते हैं कि धर्म और दर्शन, गरीबी, आदि बातें मनुष्य को आत्महीन बनाकर गुलामी की दासता में ढकेल देती हैं और इन्हीं सब बातों का मनोविज्ञान की दृष्टि से गहरा अध्ययन कर आपने नाटक 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' वर्णन किया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक क्षेत्र में 'हानूश' नाटक द्वारा नाटक क्षेत्र में भीष्मजी ने पदार्पण किया है। आपके इसी 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' नाटकों को पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

सोवियत संघ के अपने प्रवास-काल में भीष्मजी चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग पहुँचे। प्राग के पुराने गिरजाघर तथा पुराने घण्टाघर की घड़ी को देखते हुए उसका इतिहास तथा तत्कालीन बादशाह द्वारा उस घड़ी के निर्माता को दिए गए विलक्षण पुरस्कार की कहानी का भीष्मजी के मन-मस्तिष्क पर जो गहरा प्रभाव पड़ा उसी प्रभाव ने 'हानूश' नाटक को जन्म दिया। प्रस्तुत नाटक के रचनाकार कलाकार की सृजनेच्छा शक्ति और संकल्प की तीव्रता को अच्छी तरह से समझते हैं। हानूश कलाकार की विवशता, निरीहता और संकटापन्न स्थिति को नाटककार ने मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। हानूश की आकुलता और पीड़ा को यथार्थ के साथ मन:स्थिति को यह नाटक दर्शाता है। कलाकार की मानसिक व्यथा, दमन की स्थिति और सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ को व्यंग्यात्मक स्वर में प्रकट करने का कार्य भीष्मजी ने किया है। सामान्य कलाकार की अपने कला के प्रति छटपटाहट, पारिवारिक तनाव, अपने परिवार के प्रति लगाव, आर्थिक संकट होते हुए भी मन में उठनेवाले संवेगों को उचित दिशा देने का कार्य यह नाटक अपने तीन अंकों में सफलता से करता है।

'हानूश' नाटक में हानूश और उसकी पत्नी कात्या के बिच आर्थिक संकट पैदा हुआ उसका चित्रण किया है। हानूश का आर्थिक संकट स्थायी नहीं है, फिर भी वह हानूश के प्रति कड़वाहट और पीड़ा-भरे संवादों से उसके मन को ठेंच पहुचाता है। हानूश की घड़ी के प्रति लगन तथा उसकी तीव्र सृजनशीलता को दिखाया है। अपने हालात के कारण हानूश का मन द्विधा परिस्थिति में है, लेकिन वह अपने मस्तिष्क से घड़ी बनाने के विचार को नहीं निकाल सकता। उसका आंतरिक मन हानूश को प्रेरणा भी देता है और उसको ध्येय के प्रति जागृतता को भी पैदा करता है। स्वार्थ से पीड़ित धर्म के रखवाले और राजनीतिक यथार्थ को भी इस अंक में दिखाया है जो आगे चलकर हानूश को मुर्दे समान बनाती है। हानूश पारिवारिक आर्थिक संकट और बाहरी दबावों के बीच भी अपने रचना कार्य से अलग नहीं होता।

हानूश की सफल सृजनशीलता, कला-चेतना और फिर सत्तापक्ष द्वारा कलाकार के प्रति अमानवीय व्यवहार की भयावह सच्चाई को प्रस्तुत करता है। जो मानव हृदय को हिला देती है। महाराज द्वारा हानूश को एक ओर दरबारी का रूतबा तो दूसरी ओर उसकी दोनों आँखे निकालने कार क्रूर आदेश दिया जाता है। एक ओर सुखद तो दूसरी ओर दु:ख दोनों अनुभवों को हानूश को एकसाथ सामना करना पड़ता है। महाराज का आदेश सुनकर चारो ओर सन्नाटा छा जाता है। हानूश की सफलता से नगरवासी उसकी प्रसंशा करते है, लम्बें उम्र की आशीष देते है, फुलों के गुलदस्ते देते है, वही नगरवासी हानूश की पीड़ा से उत्पन्न चीत्कार को भी सुनते हैं। अधिकारियों का महाराज के आदेश की पूर्ती के लिए हानूश के पास खड़ा होना इस विरोधी तनावपूर्ण स्थिति को दर्शाया है।

नगरपालिका के सदस्य जो कि राजनीतिक भी है और पूँजीपती भी। हानूश का केवल अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। अपने फायदे के लिए राजनीतिक लोग किस हद तक गिर सकते है इसका यथार्थ चित्रण इस अंक में दिखाई देता है। धर्म के रखवाले भी हानूश की घड़ी नगरपालिका पर लगाने से कुछ अशान्त से है जो आगे चलकर महाराज को भडकाने का कार्य सफलता से करते हैं और हानूश की वेदना, पीड़ा को बढ़ाने का कार्य करते हैं।

राजनीतिक लोगों के प्रति मन में दमित भावों को आवाज देने का कार्य हानूश करता है। कलाकार की अमानवीय स्थिति को, दमित जनशक्ति की आन्तरिक पीड़ा को, सत्ता की खोखली अन्धी नीति को व्यंग्य के स्तर पर अभिव्यक्ति देता है। सच्चे कलाकार के कला की मौत नहीं हो सकती इस यथार्थ को में चित्रित किया है। सामान्य मानव भी अन्याय को अधिक काल तक नहीं सह सकता, हानूश भी इसके लिए अपवाद नहीं है। राजनीति के प्रति विडम्बना इसमें है। यह अंक आन्तरिक संघर्ष की तीव्रता को बढ़ावा देता है और निडरता से आनेवाले संकटों का सामना करने की चेतनावनी भी देता है।

'हानूश' नाटक में सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ को हु-ब-हु चित्रित किया गया है। मनुष्य चाहे कितने भी आर्थिक संकटों का सामना करता हो पर उसमें यदि अपने कार्य के प्रति लगाव हो, तो वह अपना ध्येय पूरा कर सकता है। धर्म और राजनीतिक लोगों की साठगॉठ होने से साम्यवाद के लिए अड्चने पैदा हो सकती हैं। हानूश के अविष्कार के कारण धार्मिक और राजनीतिक लोगों के बीच झगड़े बढ़ने लगे, मन की अशान्ति बढ़ने लगी। धर्म की रक्षा करनेवाले ही अपने हित के लिए अशान्ति को बढ़ावा देने में कुछ कम नहीं रहे। सामाजिक भिन्नता के कारण राजनीतिक लोग मनमानी किस प्रकार करते हैं? इसका उदाहरण महाराज के निर्णय से ज्ञात होता है। लगता है दु:खों का सामना करना सामान्य लोगों की और अपने फायदे के लिए दु:ख देना राजनीतिक लोगों को आदत सी पड गई है, इस राजनीतिक यथार्थ को हानूश उजागर करता है। राजनीतिज्ञ के सामने न केवल कलाकार घुटने टेकता है बल्कि उसकी कला भी बेबस हो जाती है इस सामाजिक यथार्थ को हानूश में भीष्मजी ने दर्शाया है। जीवन के प्रति भीष्मजी की प्रतिक्रिया सचमुच तीव्र भावनात्मक है। जीवन की वास्तविकता के द्वारा मनुष्य के अस्तित्त्व को और उसकी पीड़ा को मार्क्सवादी स्वर देने का कार्य भीष्मजी ने किया है।

'कबिरा खड़ा बजार में' यह नाटक संत कबीर के जीवन और व्यक्तित्त्व को आधार बनाकर लिखा गया है। यह जनवादी नाटक तीन अंक और कुल-मिलाकर नौ दृश्यों में विभक्त है। इस नाटक में

कबीर के समय की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ जीवन्त रूप से प्रस्तुत की गयी है। तत्कालीन जीवन की विसंगतियाँ और विद्रुपताएं इस नाटक में पूरी तरह उभरकर सामने आ जाती है।

कबीर नीमा और नूरा का सगा बेटा न होकर भी उन्होंने उसे अपने सगे बेटे से जादा प्यार दिया है। उसे माता-पिता का स्नेह दिया। लेकिन बड़े होने पर कबीर का मन अपने धंदे में उतना नहीं लगता जितना मित्र-मंडली लगाने और मुल्ला-मौलवी पंडितों के शस्त्रार्थ करने में लगता है। कबीर के अपने संस्कार थे, अपना अनोखा स्वभाव था अतः वह चाहकर भी अपना मन घर के धंदों में नहीं लागा पाता। खड्डी पर काम करते, चुनरी या चादर बुनते बुनते कबीर के मुँह से वाणी फूट पडती और अपने आप पद या गीत की पंक्तियाँ बाहर निकलती है। कबीर के यही पद जनसाधारण में लोकप्रिय होते चले गये जो कबीर को अधिक लोकप्रिय बनाते चले गये।

कबीर एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे। समाज भय के कारण वह ब्राह्मणी उसे एक तालाब के किनारे छोड़ गयी थी। कबीर के इसी पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण ही उसके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठते है, जिज्ञासाएँ जन्म लेती हैं और वह उन प्रश्नों पर स्वयं भी सोचता-विचारता, दूसरों से भी प्रश्न करता। अपने प्रश्नों का उत्तर उचित न मिलने पर कबीर उद्‌विग्न हो जाते थे, उनका हृदय चित्कार करता, विद्रोह करता और वह पंडितों, साधुओं, मुल्ला-मौलवीयों से झगड़ा कर बैठता है। वे लोग कबीर पर नाराज होते है और दोनों धर्म के लोगों का कबीर दुश्मन बन बैठता है। मुल्ला-मौलवी और पंडित दोनों कबीर को गालियाँ देते है और मोंका मिलते ही उसे दण्डित भी करते है। एक बार तो उसके हाथ-पैर बांधकर गंगा में डुबाने का प्रयास किया गया है, उसे कोडे मारेजाते हैं, लेकिन कबीर जी अपने हरकतों से बाज नहीं आते। कबीर की हालात को देखकर कबीरजी के माँ-बाप दोनों परेशान होते हैं। कबीर भी उनकी चिन्ता और परेशानियों को अच्छी तरह से समझते थे, पर कबीर का मन शांति नहीं पाता और वह क्रांति तथा विद्रोह के मार्ग पर बढ़ता है। कबीर की माँ उसे बहुत समझाने का प्रयास करती है। उसके पिता भी उसे अपने जन्म के यथार्थ से परिचित कराते हैं उसको डाँटते है

लेकिन उनका ममतामयी हृदय सामाजिक भय के कारण कठोर बनता है। निर्भीक स्वभाववाले कबीर मंदिर या मस्जिद की सीढ़ियों के निकट या किसी चबुतरे पर बैठे लोगों की भीड को इकठ्ठा कर लेते है और अपना दरबार लगा बैठते हैं। मुल्ला-मौलवी और पंडितों के प्रति यथार्थ का दर्शन लोगों को करते थे। इससे मुल्ला-मौलवी और पंडित नाराज होकर कोतवाल से कबीर की शिकायत करते हैं। लेकिन कबीर पर इसका कोई उचित असर नहीं पडता।

कबीर पीड़ितों की सहाय्यता करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ते, इसके लिए चाहे किसी के साथ झगड़ा क्यों न हो। वे एक बच्चे को साधु की चंगुल से छुड़ाते भी हैं और उसके प्रति अपने विरोध का दर्शन भी कराते है। कबीर के ऐसे स्वभाव को रोकने के लिए नीमा कबीर की शादी कराती है ताकि कबीर शान्त हो मुल्ला-मौलवी और पंडितों से झगड़ा न करे। लेकिन सहृदयता, उदारता तथा स्त्री के प्रति आदर भाव रखनेवाले कबीर अपनी पत्नी लोई की विवाहपूर्व प्रेम कहानी सुनने पर उसे कुछ नहीं कहते बल्कि उसे उसी लडके के साथ शादी करने के लिए कहते है। लोई भी कबीर के दिलदार हृदय को पहचानती है और कबीर को छोड़कर नहीं जाती।

सिकंदर बादशहा भी कबीर से मिलता है और कबीर की निर्भीकता, विचारों तथा मान्यताओं को सुनता है। उसके अड़ीग स्वभाव को वह पहचानता है। बादशहा कबीर की स्पष्टवादिता आदि को देखकर प्रभावित भी होता है और रूष्ट भी। उसका कोई दीन नहीं, उसने मजहबों को छोड़ दिया है यह कबीर की बातें सुनकर बादशाह अपना संयम खो बैठता है। कोतवाल को आदेश देता है कि कबीर पर कड़ी नजर रखे और उसकी गतिविधियों के विषय में दिल्ली दरबार को सूचना देता रहे। बादशाह के इस आदेश से कबीर न भयभीत हुए न घबराये और न मौन रहे। उनका स्वर निरन्तर गूँजता रहा।

भीष्मजी संवेदनशील जागरूक, प्रगतिशील विचारों के व्यक्ति हैं, जीवन और समाज में जो कुछ घटित हो रहा है उसके प्रति उनकी प्रतिक्रिया तीव्र है इसीका परिचायक 'कबीरा खड़ा बजार में' नाटक है। प्रस्तुत नाटक में प्रगतिशील चेतना के अनुरूप सामन्ती-अभिजात्यववादी प्रवृत्ति तथा

शोषितों अन्याय पीड़ितों के बीच द्वंद्व दिखाया गया है और लेखक की सहानुभूति शोषितों के प्रति है। भीष्मजी के नाटक में सामाजिक व्यवस्था में सामान्य जन के जीवन की त्रासदी का चित्र है, उससे मुक्त होने की उनकी छटपटाहट है। भीष्मजी एक संवेदनशील, सत्यान्वेषी, समाज विशेषत: निम्नवर्ग के उत्पीड़ित-शोषित लोगों के दु:ख-दर्द को महसूस करने वाले एक जागरूक कलाकार हैं। सामाजिक यथार्थवाद के धरातल पर निर्मित उनकी यह रचना मौलिक है, जो मानवतावाद को उजागर करती है। नाटकों में सर्वत्र प्रगतीशील चिन्तन दिखाई पड़ता है। इस नाटक में आदर्शमूलक मानवतावाद, सामाजिक यथार्थवाद और मार्क्सवादी विचारधारा को सहजता से देखा जा सकता है। उनके नाटकों में उनका अनुभव, अध्ययन, चिन्तन, मनोविज्ञान और इन सबसे बना जीवन-दर्शन पाया जाता है। जो अमानुषिक वर्ग-भेद वाली कलुषित समाज व्यवस्था के अन्त, आर्थिक समानता, मानव की मानव के रूप में गरिमा और शक्ति पर बल देता है।

प्रगतिशील चिन्तन के समर्थक भीष्म साहनी भी पुरूषप्रधान समाज ने नारी का शोषण किया है यह मानते हैं, उसकी शारीरिक दुर्बलता और हृदय की कोमलता का अनुचित लाभ उठाया है। 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' की नारी पात्रों की दशा भी भोली-भाली, कर्तव्यनिष्ठ, पति के प्रति पूर्ण समर्पित तथा संतान के प्रति अगाध ममतामयी रही है। 'हानूश' की कात्या आर्थिक परिस्थिति से झुजते हुए भी पति के प्रति समर्पित भाव रखती है तो कबीर की माँ अपने पुत्र के प्रति समर्पित भाव रखती है। दोनों नाटक मानवी संवेगोंपर नियंत्रण रखकर प्रगतीशील चिंतन की नींव हमारे सम्मुख रखते हैं।

यथार्थवाद साहित्य एक महत्वपूर्ण विचारधारा एवं कला आंदोलन है। मनुष्य की धार्मिक और नैतिक मान्यताओं का विरोध कर मनुष्य के भौतिक परिवेश में यथार्थ चित्रण करना ही यथार्थवाद का प्रमुख लक्ष्य है जो 'हानूश' और 'कबीरा खड़ा बजार में' दिखायी देता है। दोनों नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर वर्तमान कालिन समाज व्यवस्था की व्यंजना करते हैं। यथार्थवाद समाज की दुर्बलताओं की ओर ध्यान तो आकर्षित करता है लेकिन उसकी दृष्टि भविष्य की बजाय वर्तमान पर

अधिक होती है। मनुष्य को अपने वर्तमान ने पीड़ा एवं दु:खों का सामना करने की ताकद यथार्थ करता है। अनेक संकटों के बावजूद भी हानूश अपने वर्तमान परिस्थिति का सामना करता है और आखिर यश संपादन करता है। कबीर भी अपने विचार लोगों के सामने डटकर रखते हैं वे न परिणामों की सोचते हैं न अपने घर की परिस्थिति की। सम्पूर्ण मानव-जाति का हित करना ही उस कबीर का एकमात्र लक्ष्य रहा है और यही यथार्थ मानव को मानवता प्रदान करनेवाला है।

समाज और राजनीति के बिना मनुष्य को जीवन यापन करना मुश्किल है। इसलिए मनुष्य जिस क्षेत्र में जिस युग में पलता है उसके धार्मिक संस्कार भी ग्रहण करता है चाहे वह समाज के हित के हो या नहीं। मनुष्य को अपने जीवन काल में अन्त तक धर्म का सामना करना पड़ता है। वह जिस धर्म में जन्म लेता है उसी धर्म की विचारधाराओं में विलिन होता है। उसे इस बात का भी पता नहीं चलता की धर्म के संस्कार मनुष्य को कितने हद तक दु:ख प्रदान करते हैं। इसीका फायदा राजनीतिक लोग अपने फायदे के लिए पूरी तरह उठाते हैं। इसके कारण ही धर्म के नामपर आडम्बर, षड़यंत्र, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता बढ़ती है। गरीब दीन-हीन प्रजा को समाज, धर्म, राजनीति सभी क्षेत्रों की कुप्रवृत्तियों का सामाना करना पड़ता है। भीष्मजी ने हमें इन दोनों ऐतिहासिक पृष्ठभूमीवाले नाटकों के माध्यम से क्रांति, विद्रोह, अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए आवश्य प्रेरित करने का कार्य किया है। लेकिन इस कार्य के लिए हानूश और कबीर की तरह त्याग, बलिदान, अदम्य इच्छाशक्ति और दृढ आत्मशक्ति की आवश्यकता है। मानव जाति के कल्याण के लिए उसके उज्वल भविष्य के लिए कुछ करने की लेखक की दृष्टि का पता चलता है।

भीष्मजी के दोंनों नाटक के पात्र अपने अस्तित्व के लिए सदैव संघर्ष करते और अपनी जीवंतता बनाए रखने का कार्य करते हैं। कुछ पात्र अपनी मनोदशा को सँवारने का कार्य सफलता से करते है और कुछ पात्र दूसरों की मन स्थिति पर कोई बुरा असर न पड़े इसलिए खुद को त्रासदी में रखते हैं। अत: भीष्मजी यथार्थवादी विचारधारा के अन्तर्विरोधी विचारों को अभिव्यक्त करने में और मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, पारिवारिक प्रसंगों में चित्रित करने में सफल हुए हैं।

मनोविज्ञान मानव जीवन की विविध परिस्थितियों के प्रति होनेवाली मानव प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। मनुष्य के व्यवहारों का अध्ययन करके उसके व्यवहारों के संदर्भ में सत्यता को सामने रखना लेखक का काम होता है। अतः लेखक यह काम साहित्य के माध्यम से लोगों के, पाठकों के सामने रखता है। भीष्मजी ने भी मानव व्यवहारों की सत्यता और परिस्थिति से पीड़ित मानव व्यथा को मनोवैज्ञानिक ढंग से अपने नाटकों में वर्णित किया है। भीष्मजी ने सामान्य लोगों के व्यवहारों को समझा है और उन्हीं व्यवहारों का भविष्य में कोई बुरा असर न पड़े, इसलिए गलत तथा समाज के सामान्य लोगों की त्रासदी करनेवाले व्यवहारों पर नियंत्रण किस प्रकार रखना चाहिए यह सोचने के लिए पाठकों को मजबूर किया है। मनुष्य समाज में रहनेवाला सामाजिक प्राणी है, इसलिए समाज के नियमों का पालन उसे करना पड़ता है। लेकिन वर्तमान स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है। मनुष्य अपना जीवन तनावमुक्त वातावरण में बिताना चाहता है, इसलिए मनुष्य के मन और उसके व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान का अनन्यसाधारण महत्त्व है।

फ्रायड ने मनुष्य के मन का अध्ययन किया है। मनुष्य के गत्यात्मक पहलू - इदम्, अहम्, और पराहम का संतुलित विकास ही मानव के व्यक्तित्त्व को विकसित कर सकता है। मानव विचारशील प्राणी है। वह सृष्टि के प्रत्येक विकल्प को समझना और जानना चाहता है। कबीर ने भी तत्कालिन परिस्थिति को जाना, समझा और उसमें परिवर्तन हो इसलिए मनुष्य के मन में दमित इच्छाओं को स्वर प्रदान किया। हानूश ने भी अन्त में अपने अन्याय का विरोध किया तथा राजनीति पर व्यंग्य किया है। मनुष्य के जीवन में भाव और संवेगों का महत्त्व है, इसी पर सुख, दुःख निर्भर रहते हैं।

'हानूश' नाटक का हानूश भय, क्रोध, चिन्ता इन सभी संवेगों का शिकार हो गया है। उसका मन अनेक बार टुट चुका है लेकिन वह अपने संकल्प के प्रति दृढ़ है। यही संकल्प पूर्ण होने पर हानूश के मन में क्रोध, भय और चिन्ता इन संवेगों की तीव्रता कम होती है। कात्या क्रोध और चिन्ता से पीड़ित है। उसका क्रोध, चिन्ता के कारण है। कात्या को अपने घर परिवावर की और अपनी बची हुई

एकलौती बेटी यान्का की चिन्ता है। कात्या की चिन्ता अर्थ के कारण भी है। हानूश का अपने पूराने काम पर लक्ष्य न होने से, पुरेसी अमदनी नहीं होती, इसलिए घर के हालात कुछ नाजूक से हो गये है। कात्या इसी कारण हमेशा चिड़चिड़ाहट करती है। हानूश की सफलता के बाद कात्या को भय संवेग हमेशा रहता है। हानूश कुछ गलत काम न कर बैठे इसलिए उसे हमेशा भय रहता है। वह एक अच्छी पत्नी होने के कारण अपने पति की मानसिक व्यथा को अच्छी तरह समझती है। हानूश की मनोदशा को कम करने का काम कात्या सफलता से करती है। हानूश की बेटी यान्का भी अपने पिता के मनस्थिति को समझती है, उनका मनोबल कम न हो इसलिए माँ को समझाती है और पिता के कार्य में सहकार्य करती है। हानूश का सहकारी बूढ़ा लोकार भी हानूश के दु:खी मन को सहारा देता है और एक सच्चे दोस्त की तरह उसकी मदद भी करता है। 'हानूश' नाटक के अन्य पात्र महाराज, जेकब, हुसाक, जॉन, शेवचेक, जार्ज, टाबर, सभी हानूश की संवेदना को बढ़ाने का कार्य करते है, लेकिन हानूश दृढ निश्चयी होने के कारण अपने कार्य में सफलता हासिल करता है।

'कबिरा खड़ा बजार में' नाटक मानव मन में स्थित रूढ़ी, परंपरा, अंधविश्वास आदि पर व्यंग्य करता हैं। मानव मन में स्थित क्रोध, भय, चिंता, घृणा, शोक संवेगों को शान्त करके प्रेम का महत्त्व बताता है। धर्म मानव-मानव को जोड़ने का कार्य करनेवाला होता है जो मानवता सिखाता है। प्रेम में ममता छुपी होती है जो मानव-मानव में होनेवाली दूरियाँ दूर करती है। कबीर जब धर्म का बिखरा हुआ रूप देखते हैं तो उनका मन उद्विग्न होता है, वे धर्म के रखवालों को आडे हाथ लेते हैं। इसीकारण उनकी परेशानियाँ बढ़ती है लेकिन कबीर सच्चाई को निर्भीड होकर समाज के सम्मुख रखते है। लोगों में सत्तापक्ष से भय होने के कारण वे खुलकर विरोध नहीं करते, लेकिन कबीर की सहाय्यता अवश्य करते हैं। कबीर का व्यक्तित्त्व बहिर्मुखी है जो सामाजिक जीवन में क्रियाशील रहता है और समाज परिवर्तन के कार्य में हमेशा अग्रेसर रहता है। कबीर मनुष्य जाती की एकता और सुख को महत्त्व देते हैं, सर्वसमभाव को वे महत्त्व देते हैं।

कबीर की माँ नीमा तो नारी जीवन के परिवार के केन्द्रबिंदू है। उसकी मनोदशा तो द्वंद्व सी है, कबीर के कृत्यों के कारण उसका ममतामयी हृदय दु:खी है तो पति के कठोर शब्दों से वह भयभीत है। फिर भी अन्त तक अपने कोमल और संयमी हृदय का परिचय देती है ज्यों कि नारी भावना को उच्च कोटी तक पहुँचाने में सहाय्यक होता है। कबीर की पत्नी लोई भी पलायनववादी वृत्ती की न होकर समर्पण भाव से प्रेरित है। कबीर की सभी घटनाओं को वह जानती है। उसके स्वभाव से वह परिचित है। कबीर के पिता नूरा अनुशासनप्रिय है, वह मानता है कि जिस समाज में रहना है उसके नियमों का पालन करना चाहिए। इसलिए कबीर को ठीक करना चाहता है लेकिन अड़ीग स्वभाववाले कबीर नूरा की व्यथा को बढ़ाने का कार्य करते है। नूरा का आचरण परिस्थतिवश है, फिर भी उनका मन कबीर का हित चाजता है। वे कबीर को दु:खी नहीं देख सकते। नाटक के अन्य पात्र भी कबीर की व्यथा को बढ़ाने का कार्य करते हैं, इनमें कोतवाल, कायस्थ, सिकंदर बादशहा आदि महत्त्वपूर्ण भूमिका करते हैं। कबीर के सभी साथी सेना, बशीरा, पीपा, रैदास उसका मनोबल बढ़ाने का कार्य करते है। सभी सुख-दु:खों के समय में कबीर के साथ रहते हैं। अर्थात यह नाटक लेखक के मन की संवेदनशीलता के साथ-साथ मार्क्सवादी विचार भी प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के पहले अध्याय में भीष्म साहनी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व का परिचय दिया है। भीष्मजी के व्यक्तित्त्व के पहलुओं पर प्रकाश डालने का कार्य इस अध्याय में प्रथमत: किया है, बाद में उनके कृतित्त्व में उनके उपन्यास, कहानी, नाटक, अनुवाद, जीवनी का अल्पसा परिचय दिया है। उनकी कथावस्तु संक्षेप में दी है।

दूसरे अध्याय में भीष्मजी के प्रसिद्ध नाटक 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' इनकी कथावस्तु दी गयी है। यह कथावस्तु देते समय पात्रों का परिचय और उन पात्रों के व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डालने का कार्य किया है।

तीसरे अध्याय में 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' इन नाटकों में दिखाई देने वाले सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ को दर्शाने का कार्य किया गया है। यथार्थ की परिभाषा, उनके भेद इसका परिचय दिया गया है। यथार्थ के भेदों के अनुसार नाटक में दिखाई देने वाले यथार्थ को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

चौथे अध्याय में 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' नाटकों के प्रमुख पात्रों की मनोदशा पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। प्रथमतः मनोविज्ञान - उसका अर्थ, मनोविज्ञान का उदय, परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व एवं उपयोगिता, फ्रायड के सिद्धान्त का अल्प परिचय देने का प्रयास इस अध्याय में किया है। मानव मन में स्थित संवेग और उन संवेगों के अनुसार प्रस्तुत नाटक के प्रमुख पात्रों में दिखाई देनेवाले संवेगों को इस अध्याय में दिखाया गया है।

भीष्म साहनी का व्यक्तित्त्व और उनकी मूल विचारधारा इन नाटकों में अभिव्यक्त होती होई मिलती है। आप साम्यवादी विचारधारा को लेकर चले हैं। इन बीती हुई घटनाओं के आधार पर लिखे गये नाटकों में भी उस विचारधारा को प्रतिबिम्बित पाते है। लेखक को समझमें ये नाटक काफी सहायता करते है।